

प्रेम जी महिमा

प्रभु अ खे वसि करण में समर्थ प्यारो प्रेम आ
जप तप संजम साधन खां भी परम उज्यारो प्रेम आ
लोक परिलोक बिन्ही खे संवारे रस आधारो प्रेम आ
परमानंद जो दानु करे थो दिलबरु दुलारो प्रेम आ॥

कुलिश कठोर हिन्ये खे भी अति पघिरायो प्रेम आ
नीरस खुशिक हृदय खे भी सरसु बणायो प्रेम आ
अगम पंथ खे सुगमु करे स्वदेशु देखारियो प्रेम आ
सतिगुरु भगुवन्त भी रीझनि था इयें निगम बुधायो प्रेम आ॥

प्रेमु ई रसु आ प्रेमु ई अमृतु नींह जी धारा प्रेम आ
प्रेमु प्यारो जीअ जियारो सभ सुख सारो प्रेम आ
कोटि तीर्थ खां पावनु प्यारो परम उदारो प्रेम आ
प्रभू प्रेम में भेदु न आहे प्रभू अवतारो प्रेम आ॥

श्री गणेशाय नमः

जै अवधपति सियाराम जू जै बृजपति श्यामा श्याम।
जै नानक देव सतिगुरु सचा जै अखण्डानंद सुखधाम॥
जै मैगसि माय दया निधी जै रघुवर भक्ति भण्डार।
जै करुणा सिंधु साईं अमां जै सुख निवास सरदार॥



